

10. मां कर्मभिर्विप्रा यज्ञधम् 14, 28. पुण्येन कृपमेधेन मामिष्ट्वा R. 7, 85, 21. यज्ञैरिष्यत्तमोश्चरम् MBh. 2, 1825. HARIV. 2806. तानि सर्वाणि देवतानि) यक्ष्यामि तीर्थान्यापतनानि च 82, 84. 5, 33, 18. BHĀG. P. 3, 32, 17. इन्द्रदेवा-
न्युप्राहिताः BHATT. 14, 90. यज्ञ इह देवताः BHĀG. 4, 12, 9, 23. MBh. 3, 8890. R. 2, 52, 79 (19 GORR.). 7, 83, 20. BHĀG. P. 5, 3, 1. BHATT. 1, 2. ऐषोयं
मासमाकृत्य शाला (= पर्णशालाधिष्ठातृदेवताम् Schol.) यक्ष्यामहे वयम्
R. 2, 56, 18. 21. इष्ट्वा देवान्पितृन् KATHĀS. 27, 118. शक्रस्य यदर्थं धनं इष्यते
HARIV. 3790. गिरिरस्माभिरिष्यताम् 3850. ज्ञानेनैवापरे विप्रा यज्ञय्येते-
र्मज्ञैः सदा M. 4, 24. यक्ष्यति च नरव्याघ्राः — राजसूयाश्चमेधाद्यैः क्रतुभिः
MBh. 1, 6098. 7664. सुतार्थं वाजिमेधेन किमर्थं न यज्ञाम्यहम् R. 1, 8, 2, 11,
8. MĀRK. P. 36, 2. इयाञ्च च मन्त्रामहैः 37, 2. यज्ञैर्बहुभिरिज्ञिवान् R. GORR.
1, 44, 6. यज्ञेन राजा क्रतुभिर्विधिः M. 7, 79, 5, 53. 8, 306. 11, 74. MBh.
9, 2885. 13, 3331. 14, 22. MĀRK. P. 26, 39. यद्ये 22, 9. HARIV. 11088. यक्ष्य-
माणं BHĀG. P. 1, 12, 33. 7, 13, 10. ईजिरे च मन्त्रायज्ञैः क्षत्रियाः MBh. 1,
2473. 3120. 3, 2235. 3067. 8385. 8523. 11000 (S. 569). 12745. 14864. R.
GORR. 1, 1, 92. मन्त्रैः क्रतुभिरिज्ञानो भरतः MBh. 1, 3712. 3, 10526. ई-
जितुं राजसूयेन 2, 1230. इष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैः M. 6, 36. 37. 4, 27. MBh. 3,
2414. 13, 328. R. 1, 1, 91. BHĀG. P. 4, 3, 3. इष्ट्वानश्चमेधेन R. 1, 14, 7. इष्टं
स्यात्क्रतुभिस्तेन JĀĠĠ. 1, 358. AK. 2, 8, 4, 3. तस्मान्नात्पधेनो यज्ञेत् M. 11,
40. क्षत्रियो धनुराश्रित्य यज्ञेच्चैव न याजयेत् MBh. 4, 1558. R. 1, 87, 11.
89, 3. 2, 32, 41. 36, 8. BHĀG. P. 10, 72, 14. यज्ञा तु विधिनेष्ट्वान् AK. 2,
7, 8. अधीत्य ब्राह्मणो वेदान् याजयेत् यज्ञेत् च MBh. 4, 1558. 12, 234. यत्रा-
यज्ञत धर्मो ऽपि 3, 10098. यदर्थं यज्ञसे R. 1, 15, 14. 2, 56, 24. तस्मिंश्च यज्ञ-
माने MBh. 1, 4687. 3, 2238. 8381. R. 1, 61, 6. R. GORR. 4, 13, 3. M. 11, 24.
ÇĀK. 31, 1. यद्ये BHĀG. 16, 15. R. 1, 11, 20. यक्ष्यमाणं M. 11, 1. इज्ञान 87.
यष्टुं समुपचक्रमे R. 1, 39, 25. 61, 5. इष्ट्वा M. 4, 236. R. 2, 72, 25. — b) mit
dem acc. des Opfers, Liedes u. s. w., worin sich die Cultushandlung
vollzieht: सेमं नौ अघ्नं यज्ञं RV. 1, 26, 1. 6, 32, 12. यज्ञं नौ यत्तत्तमिमम् 4,
142, 8. 188, 7. 10, 130, 6. यथायज्ञो क्रोत्रमग्ने पृथिव्याः 3, 17, 2. शतयाज्ञं स
यज्ञे AV. 9, 4, 18. ऋचं सामं यज्ञामहे 7, 84, 1. इष्टो यज्ञो भृगुभिः VS. 18, 56.
दर्शपूर्णमासौ TS. 2, 5, 4, 1. KĀTJ. Ça. 4, 6, 10. आश्वभागी 19, 4, 3. प्रयाजान्
ÇĀK. Ça. 5, 13, 13. यज्ञस्यभीष्टितं यज्ञम् MBh. 2, 1228. R. GORR. 4, 41, 7.
2, 74, 28. दर्शं पौर्णमासं च MBh. 9, 2884. पुत्रियामिष्टम् R. 1, 13, 3 (2 GORR.).
राजसूयम् H. 691. सर्वस्वदत्तिणां यज्ञमिष्ट्वान् 819. मा यज्ञेयाः क्रतुम् HARIV.
11111. बलौ तदा यज्ञं यज्ञमाने R. 1, 31, 5 (32, 5 GORR.). 40, 7. ईजिरे यज्ञम्
MBh. 13, 3333. R. 2, 72, 27. 7, 90, 13. यष्टुकामो मन्त्रायज्ञम् 4, 57, 17. यज्ञो
विधिदृष्टो य इष्यते BHĀG. 17, 11. अश्चमेधादयो यज्ञास्त्वपेष्टाः MĀRK. P. 13,
54. सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदत्तिणाः AK. 2, 7, 9. — c) mit dat.
der Person und acc. der Sache: मन्त्रं यज्ञतु (AV. यज्ञताम्) मम् यानि कृ-
व्या RV. 10, 128, 4. mit loc. der Person MAITRĀJ. 6, 9. die Person im
acc. mit प्रति R. 2, 107, 11. — d) opfern so v. a. hingeben: यज्ञतीभिः
स्वविग्रहान् BHATT. 8, 49. — e) med. verehren, opfern um Etwas (acc.):
सद्यम् RV. 7, 36, 5. — 2) im Ritual durch die Jāġjā-Strophe zum Opfer
einladen: चतस्रो देवता यज्ञति ÇĀT. Ba. 1, 9, 2, 6. 4, 4, 5, 16. ÇĀK. Ça.
7, 4, 3. 10, 7, 9. — Vgl. 2. अनिष्ट 2. इष्ट.

— caus. याजयति, अयाजयत् Jmd (acc.) zum Opfer verhelfen, für Jmd
als Opferpriester thätig sein, mit instr. der Feier TS. 2, 2, 2, 2. 6, 2, 2,
2. याजयत मा द्वादशकृत्न AIR. Ba. 4, 25. 8, 11. यभिर्गोभिर्हृदमयं प्रत्यमेधा

VI. Theil.

अयाजयत् 22. ÇĀT. Ba. 13, 5, 4, 1. अयाजयं याजयित्वा ĀCV. GĀR. 3, 6, 8, 1,
23, 4, 19. एते ऽकीनेकाहैर्याजयति ĀCV. Ça. 4, 1, 7. KAUC. 46. KAUSH. UP. 1, 1.
Ind. St. 3, 461. 4, 330. संवत्सरे ऽस्थीनि याजयेयुः sie sollen den Asthi-
jagāna anstellen KĀTJ. Ça. 25, 13, 36. ÇĀK. Ça. 13, 11, 9. यज्ञैर्यज्ञति ये
केचिद्याजयति च ये द्विजाः MBh. 1, 7664. 4, 1558 (act. und med.). 12, 234.
याजयति च ये पूगान् M. 3, 451. वृषलम् P. 3, 3, 145, Sch. याजयामास तं
काण्वः MBh. 1, 3121. 6377. 14, 125. 127. R. 1, 10, 26 (27 GORR.), 37, 19
(59, 17 GORR.). Verz. d. Oxf. H. 59, b, 22. स्वयं मां देवदेवेश याजयस्व MBh.
1, 8123. 14, 127. ययातिं ऋभकर्माणां देवैर्या याजितः स्वयम् 1, 222 (S. 9).
ततः स याजयामास सोमकं तेन जत्तुना 3, 10492. सोमेन याजयन्वीरम् BHĀG.
P. 9, 3, 24. याजयित्वाश्चमेधेस्तम् 1, 8, 6. 6, 13, 6. 10, 74, 16. 79, 30. अयाजय-
द्दोसवेन गोपराजं द्विजोत्तमैः er hieß ihn opfern vermitteltst ausgezeich-
neter Brahmanen 3, 2, 32. 1, 12, 36. mit zwei acc.: तं च ते याजयामासुर्-
जदीनाम् R. 7, 57, 10.

— desid. यियत्तति zu opfern verlangen Schol. zu P. 1, 2, 10. चाण्डा-
लस्य यियत्ततः R. GORR. 1, 61, 14. यियत्तमाणं MBh. 2, 59.

— intens. यायज्यते, यायज्जीति Schol. zu P. 7, 4, 83.

— अति mit dem Opfer übergehen: यः स्वां देवतां मतिपञ्जते TS. 2, 5, 4, 4.

— अनु nachher verehren: तममिष्टमेनानुपञ्जति Schol. zu KĀTJ. Ça. 16,
1, 4 (ungedr.). PANĒAR. 3, 7, 17 ist तदनु यज्ञेच्च zu schreiben. — Vgl. अनु
याग, अनुयाज.

— अप mit einem Opfer vertreiben, wegopfern: तांस्ते यज्ञस्य मायया
सर्वानपयज्ञामसि KAUC. 97.

— अभि mit Opfer ehren: देवता अभियज्ञत् GORR. 4, 7, 16. ग्रामावात्स्येन
रुचिषा पूर्वपत्तमभियज्ञते 1, 3, 6. PANĒAR. 3, 7, 12. Hierher zieht SĀJ. भृ-
द्वाज्ञान्साङ्गयो अग्नेयष्ट (= अयुजयत्) RV. 6, 47, 25. ein Opfer (acc.) dar-
bringen: अश्चमेधं यज्ञं वैज्वं शक्रो ऽभियज्ञताम् MBh. 12, 13217.

— अय durch Opfer oder Gebete abwenden, vertreiben, durch Gaben
abfinden: मुन्वानो हि ष्मा यज्ञत्यत्र द्विषः RV. 1, 133, 7. अयं यत्न नो व-
रुणं रराणाः 4, 1, 5. 7, 80, 9. अयं देवानो यज्ञं क्रेडां अग्ने AV. 19, 3, 4. TBa.
1, 4, 2, 3. यज्ञस्य मायया सर्वानवयज्ञामहे (वरुणस्य पाशान्) 3, 10, 2. TS.
2, 3, 22, 1. निरवतिम् 5, 2, 4, 3. 6, 2, 1. एनः 6, 6, 2, 1. ÇĀT. Ba. 12, 9, 2, 4. 13,
3, 2, 5. KĀTJ. 21, 6. 36, 6. — Vgl. अययजन्, अययाज्, अवेष्टि.

— निरव abfinden gegenüber von (abl.): ऋतुभ्य एव रुद्रं निरवयजते
KĀTJ. 21, 6.

— आ 1) huldigend darbringen, weihen: येभ्यो क्रोत्रां प्रथमामायज्ञे
(vgl. zu P. 6, 4, 120) मनुः RV. 10, 63, 7. 61, 11. 1, 121, 5. आङ्कितम् AV.
19, 4, 1. Partic. रूष्ट. Die unter 3. इष् mit आ aufgeführten Stellen sind
vielleicht hierher zu ziehen, da इष् sonst mit dieser Praep. nicht vor-
kommt; und zwar RV. 1, 184, 2 so v. a. Huldigungen (अन्वेष्टारौ SĀJ.),
AIR. Ba. 1, 26 und VS. 5, 7 so v. a. eropfert, durch Verehrung gewonnen;
s. unten 3). MAH. zu VS. theilt diese Auffassung, während SĀJ. zu AIR.
Ba. एष्टुं und एष्टा als nom. ag. zu इष् annimmt, ähnlich auch im Comm.
zu TS. 1, 2, 22, 1. — 2) verehren, mit acc.: आ ये क्रोत्रा यज्ञति विश्ववा-
रम् RV. 7, 7, 5. ये देवास्तस्त्रिरुन्वायजते 3, 4, 2. येषु विश्वस्त्रिषु पृष्टेष्टः
VS. 23, 49. — 3) eropfern; überh. verschaffen (dem Menschen von den
Göttern), zuwenden; med. auch sich verschaffen: आ हि ष्मा मूनवे पि-
ता यज्ञति RV. 1, 26, 3. 40, 4. अग्ने मन्त्रिं द्रविणामा यज्ञस्व 3, 1, 22. यस्मै व-